इंद्रावती कहे साथ, हवे न कीजे विस्वास।
खिण न मूकिए पास, एवी बांधो वेल री।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे मेरे साथजी! अब इनका बिलकुल विश्वास न करो। एक क्षण के लिए भी इनका संग न छोड़ो। मोहन बेलि की भांति इनसे चिपटे रहो।

॥ प्रकरण ॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ ७२१ ॥

राग धोलनी चाल

जुओ रे सखियो तमे वाणी वालातणी, बोलेते बोल सुहामणां रे।
मीठी मधुरी वात करे, हूं तो लऊं ते मुखनां भामणां रे।। १ ।।

हे सखी! वालाजी के वचन देखो। यह कितने प्यारे बोल बोलते हैं। इनकी माधुरी वाणी पर मैं न्यौछावर हो जाऊं।

हावसुं भाव करे वालो हेते, गुण ने घणां वालातणां रे।
रामत करतां रंग रेल करे, झकझोल मांहें नहीं मणां रे।। २ ।।

वालाजी बड़े ढंग से हाव-भाव करते हैं। इस गुण में उनकी जरा भी कमी नहीं है। रामत करते समय बड़ा आनन्द करते हैं तथा छेड़छाड़ में निपुण हैं।

जुओ रे सखियो मारा जीवनी वातडी, मारा मनमा ते एमज थायरे।
नेंणा ऊपर नेह धरी, हूं तो धरूं वालाजीना पाय रे।। ३ ।।

हे सखियो! मेरे मन की एक बात देखो। ऐसा लगता है कि वालाजी के चरणों को अपने नेत्रों की पलकों पर धर लूं।

सुण सुंदरी एक वात कहूं खरी, ए ते एम केम थाय रे।
नेणां ऊपर केम करीस, ए तो नहीं धरवा दिए पाय रे।। ४ ।।

दूसरी सखी उत्तर देती है कि मैं स्पष्ट कहती हूं कि ऐसा हो ही नहीं सकता। वालाजी पलकों पर किसी तरह भी चरणों को नहीं धरने देंगे।

जो हूं एम करूं रे बेहेनी, मारा जीवनी दाझ तो जाय रे।
कोई विध करी छेतरूं वालो, तो मूने केहेजो वाह वाह रे।। ५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे सखी! यदि मैं ऐसा कर लूं तो मेरे जीव की तड़प शान्त हो जाए। किसी प्रकार से वालाजी को ठग लूं तो मेरे को शाबासी देना।

सुणो रे वालैया वात कहूं, तमारा भूखण बाजे भली भांत रे।
लई चरणने निरखूं नेत्रे, मूने लागी रही छे खांत रे।। ६ ।।

हे वालाजी! सुनो, आपके आभूषण आवाज करते हैं। मेरी इच्छा है कि आपके चरणों को नैनों से निहारूं।

जुओ रे सखियो मारा भूखण बाजतां, झांझरिया ते बोले रसाल रे।
लेनी पग धरूं तुझ आगल, पण बीजी म करजे आल रे।। ७ ।।

वालाजी कहते हैं, सखियो! देखो, हमारे आभूषण बजते हैं। झांझरी की आवाज रस भरी है। मैं अपना पैर तुम्हारे आगे रख देता हूं। तुम कोई शरारत नहीं करना।

Nijanand App

लई चरण ने भेल्या नेणां, वाले जोयूं विचारी चित रे।
वटकी चरण ने लीधां वेगलां, जाणी इंद्रावती रामत रे।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी ने चरण को उठाकर नैनों से लगा लिया। वालाजी ने चित्त में यह विचार कर कि श्री इन्द्रावतीजी की यह रामत है, ऐसा जानकर अपने चरण को झटके से वापस खींच लिया।

वाले वेगे लीधी कंठ बांहोंडी, बेठा अंग भीडीने हेतमां रे।
नेह थयो घणो नेंणांसुं, दिए नेत्रने चुमन खांतमां रे।। ९ ।।

वालाजी ने तुरन्त गले में हाथ डालकर प्यार से चिपका लिया। श्री इन्द्रावतीजी के नैनों से बड़ा प्यार हो गया और आंखों को चूम लिया।

रंग रेल करी रस बस थया, सखी स्याम घणां अमृतमां रे।
लथबथ थई कलोल थया, ए तो कूपी रह्या बेहू चितमां रे।। १० ।।

आनन्द के रस में दोनों सराबोर (डूब गए) हो गए। अमृतमय आनन्द में विभोर होकर दोनों एकाकार हो गए।

कहे इंद्रावती सुणो रे साथजी, वाले सुख दीधां घणां घणां रे।
नवलो नेह वधारयो रमतां, गुण किहां कहूं वालातणा रे।। ११ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, प्यारे सुन्दरसाथजी! वालाजी ने इस तरह बहुत घने सुख दिए। उनके गुणों की महिमा कहां तक गाऊं? वह नए-नए ढंग से खेलते-खेलते खेल में प्रेम बढ़ाते हैं।

॥ प्रकरण ॥ ३७ ॥ चौपाई ॥ ७३२ ॥

राग केदारो

बलियामां दीसे बल, अंग आछो निरमल।
नेंणां कटाछे वल, पांपण चलवे पल, अजब अख्यात।। १ ।।

वालाजी में बड़ा उत्साह है। उनका शरीर बहुत अच्छा है, नेत्र तिरछे हैं, पलकें चलाते हैं, ऐसी अजब शोभा है।

जनम संघाती जाण्यो, मन तो ऊपर माण्यो।
सुंदरी चितसुं आण्यो, विविध पेर वखाण्यो, वालानी विख्यात।। २ ।।

वालाजी जन्म के साथी हैं। यह हमने मन से मान लिया है। हे सखियो! हमने तरह-तरह से वालाजी के गुणों का बखान किया, जिसे तुम चित्त में धारण करो।

वालोजी वसेके हित, चालतो ऊपर चित।
इछा मन जे इछत, खरी साथनी पूरे खंत, भलो भली भांत।। ३ ।।

वालाजी विशेषकर हमारे हितकारी हैं। चित्त के ऊपर चलते हैं। मन की इच्छा बड़ी चाह के साथ पूरी करते हैं।

इंद्रावती कहे खरूं, मूलनो संघाती वरूं।
ए धन रुदयामां धरूं, अंगथी अलगो न करूं, खरी मूने खांत।। ४ ।।

श्री इन्द्रावतीजी सत्य कहती हैं कि मूल के सम्बन्ध से मैं इन्हें पति बना लूं। इस अमूल्य निधि (न्यामत) को हृदय में धारण करूं। अपने से कभी जुदा न करूं, ऐसी मेरी चाह है।

Nijanand App